ISSN: 2393-8900 IMPACT FACTOR : 1.9152(UIF) VOLUME - 4 | ISSUE - 3 | NOVEMBER - 2017

HISTORICITY RESEARCH JOURNAL

असहयोग आंदोलन में छिन्दवाड़ा जिला की भूमिका : एक अध्ययन

डॉ. धनाराम उइके
सहायक प्राध्यापक इतिहास, श्री.श्री.ल.ना.शासकीय पेंचव्हेली स्नातकोत्तर महाविद्यालय परासिया जिला – छिंदवाड़ा (म.प्र.).

शोध सारांश :–

भारत में स्वतंत्रता संग्राम का लम्बा इतिहास रहा है। प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम 1857 के समय भी छिंदवाड़ा प्रांत में हलचल रही है। इस समय वीर सेनानी तात्याटोपे का आगमन हुआ था। 1858 से 1905 ई0 तक का समय छिन्दवाड़ा जिले का इतिहास राजनैतिक दृष्टि से शून्यकाल था। 1906 ई0 से यह जिला राजनीतिक गतिविधियों का प्रमुख केन्द्र बन गया । मई 1906 ई0 में नागपुर से डॉ.व्ही.एस.मुंजे तथा दादा साहेब खापड़े छिन्दवाड़ा आये थे। इनके द्वारा नागपुर में "राष्ट्रीय मण्डल नामक दल की स्थापना का गई"। छिन्दवाड़ा में भी इस दल की एक शाखा खोली गई।। इसी प्रकार 1907 ई0 में कांग्रेस के गरमदल वाले धड़े ने नागपुर में अधिवेशन किया गया । इसकी औपचारिक प्रांतीय समिति में छिन्दवाड़ा के सदस्य के रुप में श्री विश्वनाथ साल्पेकर तथा वर्तक वकील को चुना गया । गांधी जी के भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के नेतृत्व हासिल करने के पश्चात आम भारतीय नागरिक की भागीदारी सुनिश्चत हुई। असहयोग आंदोलन ब्रिटिश सरकार के खिलाफ पहला बड़ा जन आंदोलन था।

प्रस्तुत शोध पत्र के द्वारा असहयोग आंदोलन में छिन्दवाड़ा जिला की भागीदारी का अध्ययन किया गया है। पर्वतीय एवं जनजातीय बहुल जिला होने के बाबजूद असहयोग आंदोलन की सफलता एवं स्वतंत्रता संग्राम में योगदान को रेखांकित किया गया ।

परिभाषिक शब्द :– असहयोग आंदोलन, अधिवेशन, स्वतंत्रता संग्राम।

प्रस्तावना –

प्राकृतिक सौदंर्य और संसाधनों से भरपूर छिदवाड़ा जिले के पर्वत तथा पठारी भाग सतपुड़ा की महादेव पर्वत श्रैणियों के अंतर्गत आते हैं, छिन्दवाड़ा जिले का नामकरण इसकी भौगोलिक और अन्य विशेषताओं के आधार पर किया गया है। जानकारों का मानना है कि इस जिले में कभी छींद के पेड़ बहुतायत में थे । छिंद नाम का छोटा सा गांव था, जहॉ बाद में अयोध्या फैजाबाद से आए रतन रघुवंशी नामक हाथी व्यापारी द्वारा छींद का बाडा बनाकर बड़ा भवन बनाया था, तब से ग्राम छिन्दवाड़ा नाम से जाना जाने लगा।

जिले की सीमा का निर्धारण पहली बार ब्रिटिश शासन काल के दौरान सन् 1861 में किया गया। सन् 1866 में जिले का क्षेत्रफल 6908 वर्ग किलोमीटर था इसके बाद समय–समय पर जिले की सीमा में बदलाव होता रहा। 1931 से 1956 तक सिवनी जिले का हिस्सा भी छिदवाड़ा में शामिल था। सन् 1956 में मध्यप्रदेश राज्य का गठन होने के बाद इसकी सीमा में बदलाव नही हुआ।[1]

सितम्बर 1920 में कोलकाता के विशेष अधिवेशन में गांधी जी ने असहयोग का प्रस्ताव पेश किया था। फिर दिसम्बर 1920 में कांग्रेस का पैंतीसवा साधारण अधिवेशन नागपुर में हुआ यह अधिवेशन अब तक के कांग्रेस के हुए अधिवेशनों में सबसे बड़ा था । इस अधिवेशन में पं. शुक्ल ने कांग्रेस की ओर से सब भारतीयों से उपाधि, सरकारी स्कूल, कॉलेज और अदालत त्याग की मॉग तथा देश के वकीलों, सरकारी नौकरी के नाम असहयोग की अपील की गई तो सैकड़ों वकीलों ने वकालात एवं सरकारी ने नौकरी छोड़ दी।

आन्दोलन के लक्ष्य तथा कार्यक्रम :–

आन्दोलन के दो लक्ष्य थे– रचनात्मक और ध्वंसात्मक। **पहले लक्ष्य** की प्राप्ति का लिए निश्चय किया गया कि तिलक स्वराज कोष के नाम पर एका करोड़ रुपया इकट्ठा किया जाए जिससे असहयोग आन्दोलन कार्यक्रम का व्यय चलाया जा सके, एक करोड़ स्वयंसेवक भर्ती किये गये जायें जो बहिष्कार आदि कार्यों में सहायता दे सकें, और बीस लाख चरखें लोगों में वितरित किये जाये जिससे बेरोजगारों को धन्धा मिल सके और स्वदेशी का प्राचार हो सके।

ध्वंसात्मक कार्यक्रम :

निम्नलिखित बातें सम्मिलित थी – 1. वकीलों द्वारा न्यायलयों का बहिष्कार और न्याय के लिए लोक – न्यायलयों की स्थापना। 2. सरकारी अथवा सहकारी मान्यता / सहायता प्राप्त विद्यालयों एवं महाविद्यालयों का बहिष्कार और राष्ट्रीय शिक्षा – संस्थाओं की स्थापना 3. विधानसभा तथा प्रांतीय परिषदों के चुनावों का बहिष्कार 4. सम्मान तथा उपाधियों का परित्याग और राजकीय समारोहों का बहिष्कार 5. अंग्रेजी माल का बहिष्कार और 6. मादक द्रव्यों का प्रतिबंध ।

राष्ट्रीय कांग्रेस का नागपुर अधिवेशनः–

सन् 1920 के अंत में जब राष्ट्रीय कांग्रेस का अधिवेशन नागपुर में हुआ तो क्षितिज से सर्व श्री विश्वनाथ दामोदर साल्पेकर, उमाकांत बलवंत घाटे, ब्रजमोहन वर्मा, कृष्णा स्वामी नायडू, वीर बाबूराव हरकरे आदि नेताओं ने उस अधिवेशन में भाग लिया । नागपुर से लगे क्षितिज के लोधीखेड़ा, बेरड़ी, सौंसर, पाण्ढुर्णा, रामाकोना, तिगांव आदि जगहों से कई लोगों ने भाग लिया तथा स्वयं सेवक बनकर कार्य किया।[2]

महात्मा गाँधी का छिन्दवाड़ा आगमन –

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के जन चेतना जागृत करने हेतु छिन्दवाड़ा में सन् 1921 में कांग्रेस का प्रांतीय अधिवेशन आयोजित किया गया था। नागपुर – कांग्रेस के पश्चात् गांधी जी ने देश के अनेक भागों का व्यापक दौरा किया जिसका उद्देशय असहयोग, अहिंसा तथा साम्प्रदायिक एकता का प्रचार–प्रसार करना था। छिन्दवाड़ा के लिए यह सौभाग्य की बात है कि गाँधी जी का यह ऐतिहासिक दौरा यही से आरंभ हुआ । उस समय गाँधी जी के छिन्दवाड़ा आगमन का श्रेय अली बन्धुओं को है, जो लम्बे समय तक बैतुल तथा छिन्दवाड़ा की जेलों में रह चुके थे तथा यहाँ के अनेक व्यक्तियों से उनका व्याक्तिगत परिचय भी हो चुका था।[3]

गाँधी जी की इस छिन्दवाड़ा प्रवास के समय उनके साथ श्रीमती सरोजनी नायडू, मोहम्मद अली, शौकत अली एवं अन्य नेतागण भी पधारे हुए थे।[4]

दिनाँक 6 जनवरी 1921 को गाँधी जी नागपुर से कार द्वारा लगभग तीन बजे दोपहर को छिन्दवाड़ा पहुँचे। उन्हें चिटनवीसगंज के समीप स्थित स्व. सेठ नरसिंहदास अग्रवाल की धर्मशाला में ठहराया गया था। छिन्दवाड़ा पहुँचने के बाद अली–बन्धुओं ने अपने पुराने मित्रों और परिचितों से मुलाकात की और बाद में एक नवनिर्मित मस्जिद में उन्होनें शुक्रवार की नमाज् अदा की । यह मस्जिद अली–बन्धुओं के सहयोग से उसी समय निर्मित हुई थी।

दोपहर को गाँधीजी ने महिलाओं की एक सभा में भाषण दिया । इस सभा मे भाग लेने छिन्दवाड़ा और आसपास के गाँवों से महिलायें बड़ी संख्या में एकत्रित हुई थी। गाँधी जी ने तिलक स्वराज–फण्ड के लिये महिलाओं से दान की अपील की जिसका प्रत्युत्तर महिलाओं ने बड़ी संख्या में श्रम और आभूषण दान देकर दिया ।

छिन्दवाड़ा में अहसयोग आंदोलन :–

गाँधी जी के छिन्दवाड़ा आगमन की खबर मिलते ही अपार संख्या में जनता गांव–गांव से व आसपास के जिलों तक से आई। गाँधी जी का अभूतपूर्व जुलुस नगर के प्रमुख मार्गों से निकाला गया । संध्या को चिटनबीस गंज मैदान में एक विशाल सभा हुई, जिसमें लगभग दस हजार लोग उपस्थित थे।[5] गाँधी जी ने असहयोग आन्दोलन के पक्ष में सारगर्भित भाषण प्रस्तुत किया [6] तथा आन्दोलन के सफल बनाने हेतु जनता का आह्वान किया । यहीं से छिन्दवाड़ा में जनजागृति का सूत्रपात हुआ । भाषण से प्रभावित होकर गाँव– गाँव में आन्दोलनकारियों की टोलियाँ तैयार हो गई । वकीलों ने अपनी वकालत छोड़ दी, एंव आंदोलन का नेतृत्व करने लगे। उनमें सर्व श्री व्ही.डी. साल्पेकर, शान्ताराम मांजरेकर, व्ही.आर .ढोक, ओ.बी. घाटे, बी.एस.शर्मा एवं मोहनसिंह ठाकुर प्रमुख रहे।[7] वकीलों के द्वारा स्वराज कोष हेतु तत्काल 2500 रु. एकत्रित किये । छिन्दवाड़ा से यह आंदोलन प्रांत के अनेक स्थानों में फैल गया ।[8]

इस आंदोलन में सरकारी कर्मचारियों की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही। 7 पटवारियों ने सेवा से त्याग पत्र दे दिया।[9] छात्रों ने शासकीय एंव शासन समर्थित ईसाई शिक्षण संस्थाओं का त्याग कर इस बहिष्कार आन्दोलन को सशक्त बनाया । समूचे जिले में धरना आन्दोलन, शराब की दुकानों पर पिकेटिंग तथा विदेशी वस्त्रों की होली जलाना जैसे कार्यक्रम अबाध गति से चलाये गये।

छिन्दवाड़ा जिले की सौंसर तहसील में वीर बाबूराव हरकरे के नेतृत्व में "तीगांव" से उपरोक्त आन्दोलन के प्रस्तावों पर अमल शुरू किया। राष्ट्रीय शाला आरंभ की । खादी और स्वराज्य प्राप्ति का संदेश फैलाया आदोलन के फलस्वरूप वीर बाबूराव हरकरे पर राजद्रोह का आरोप लगाकर 1921 में एक वर्ष की सजा दी गयी। 1922 में रिहा किया गया। इनके द्वारा सैकडो कार्यकर्ता बनाये गए।[10]

निष्कर्ष –

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इस महान अनुष्ठान में छिदवाड़ा जिले के बुद्विजीवी, वकीलों, विद्यार्थियों, शासकीय कर्मचारीयों तथा सैकडों स्वंय सेवकों ने अपने अपूर्व त्याग से इस जिले मे असहयोग आंदोलन को सफल बनाने का एक सराहनीय प्रयास किया । इस आंदोलन के परिणाम स्वरूप छिदवाड़ा में राजनैतिक एवं जन चेतना जाग्रत हुई वह स्वतंत्रता प्राप्ति तक अनवरत रूप से प्रवाहित हुई । 1923 में झंडा सत्याग्रह हुआ छिदवाड़ा में इसका नेतृत्व श्री कृष्णा स्वामी नायडू, जयदेव उड़जे, देवमन वानखेडे, बेलीराम मिस्त्री, बालाजी आदि ने किया। 1930 में जंगल सत्याग्रह के अंतर्गत रामाकोना और खुटामा में बड़ी संख्या में सत्याग्रहियों ने भाग लिया। 1943 में महात्मागांधी की प्रसिद्व हरिजन उद्वार दौरा हुआ। इस अवसर पर गांधी जी पुनः छिदवाड़ा आये। छितिया बाई के बाड़े में उनकी विशाल आमसभा हुई परिणाम स्वरूप छिदवाड़ा मे स्वतंत्रता संग्राम आंदोलन ने तीव्र गति पकड़ ली। विदेशी वस्तु बहिष्कार आन्दोलन के समय जिला कचहरी के सामने विदेशी वस्त्रों की होली जलाई गई। शासन बंदी आंदोलन में भी बड़ी संख्या में आंदोलनकारियों ने भाग लिया। 1941 में व्यक्तिगत सत्याग्रह में भी छिंन्दवाड़ा जिला अग्रणी रहा एवं 1942 के " भारत छोड़ो "आंदोलन में गांधी जी के "करो या मरो" के नारे के अनुसार अनेकानेक सत्याग्रही अदम्य उत्साह के साथ आगे आये । अंततः कहा जा सकता है कि जिला में असहयोग आंदोलन एवं गांधी जी के आगमन ने लोगों के बीच देश भक्ति का जज्बा पैदा किया वह देश की आजादी तक बरकरार रहा।

संदर्भ –

1. विकास यात्रा– दैनिक भास्कर द्वारा प्रकाशित, छिन्दवाड़ा जिला के विकास पर केन्द्रित विशेष पत्रिका पृष्ठ क्र. 13
2. ओक्टे मारुतिराव – छिन्दवाड़ा क्षितिज,1993 पृष्ठ क्र. 253
3. मध्यप्रदेश और गाँधी जी –जनसंपर्क विभाग , मध्यप्रदेश शासन 1969 पृष्ठ क्र. 13
4. चवरे, मानिकराव ना. (प्र. सम्पादक) स्मारिका, जिला स्तरीय स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों को सम्मेलन 1983 पृष्ठ क्र. 41
5. खिरवड़कर एस.जी. :– मध्यप्रदेश संदेश 30 जनवरी 1988, पृष्ठ क्र. 8
6. सम्पूर्ण गांधी वांगमय खण्ड–19, प्रकाशन विभाग, सूचना प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार, पृष्ठ क्र. 209

7. चवरे, मानिकराव ना. (प्र. सम्पादक) स्मारिका, जिला स्तरीय स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों को सम्मेलन 1983 पृष्ठ क्र. 14
8. शर्मा, जे.पी. –मध्यप्रदेश में राष्ट्रीय आंदोलन (छत्तीसगढ़ के विशेष संदर्भ में) पृष्ठ क्र. 59
9. शुक्ल भगवतप्रसाद – भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में 1818 से 15 अगस्त 1947 तक छिन्दवाड़ा का इतिहास हस्त लिखित ग्रंथ,पृष्ठ क्र. 60
10. चवरे, मानिकराव ना. (प्र. सम्पादक) स्मारिका, जिला स्तरीय स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों को सम्मेलन 1983 पृष्ठ क्र. 32